सभी मानव समुदाय को एकत्रित होने का नैतिकमंत्र.

अब हमलोग अपने को इतिहास के घुमावदार बिन्दु पर पाते हे ! नैतिक चेतना हे की बढोतरी ने प्रचलित विधि को विसर्जित एवं दबाकर बदलाव की दुनिया को एक नया रास्ता दिखाया है ! इस प्रकार एक निश्चित समय पर यह शक्तिशाली (गतिशील) बदलाव प्रति विलंबित हुआ है ! और उसके द्वारा इसे पूर्ण रुप से प्रभावित होने के लिए साहस और निर्देश को आवश्यक बनाना है ! निर्माण के उद्देश्य की व्याख्या मे हमारे संत कहते है कि इश्वर जो कि सभी अच्छाईयो का सार है, उसके विश्व का निर्माण करने का उद्देश्य अच्छा करने की इच्छा है! यह १४५ वें स्त्रोत के निर्माण में कहा गया है ! सबका कल्याण करनेवाला ईश्वर है और उस के सभी कार्यो पर उसकी दया होती है ! यह प्रकृति का नियम है कि दूसरे का उपकार करने से अपना भला होता है ! ब्रहमांड के निर्माण के पीछे उपकार ही दैवीय मंथन था ! उस तरह से ब्रहमांड और समग्र जीव दैवीय अच्छाईयों का प्रतिग्राहक और फल है !

इस प्रकार विश्व में प्रत्येक वस्तुं जो कि स्तित्व मे है, यहाँ तक कि पारदर्शक बुराइयाँ जैसे कि प्राकृतिक आपदा भी तुरन्त अच्छाइयो का बदला देती है ! उसी प्रकार विना मानव के नकारात्मक प्रवृति, जो कि आवश्यकता अनुसार अच्छाई करने को इच्छुक है वह भी ईश्वर की यांत्रिक आकार है अपनी स्वयं इच्छा चुनने की ! इसके लिए ईश्वर ने विश्व का निर्माण पूर्णता और अनन्य अच्छाई के लिए किया होता तो उसे प्राप्त करने के लिए मानवता को प्रयास न करना पडता तो, अच्छाई का थोडा सा भी गुणग्रहण (मूल्यांकन) नही होता ! इस के लिए बुराई के प्रति व्यक्तिगत संघर्ष को समझना होगा, समुदायिक रुप से और व्यक्तिगत रुप से इसके सम्मुख आना चाहिए वस्तुतः जो लोगो मे अच्छाईया है जो विश्व की अच्छाईया है उसको आगे लाये और सकारात्मक विचारो को लाकर बुराई को अच्छाई द्वारा दबाया जा शकता हे, जब तक बुराई विलीन न हो जाए !

हाला कि ईश्वर ने विश्व का निर्माण कर लोगो को स्वतंत्र चुनाव (विचार) दिया है! फिर भी उन्होने हम लोगो को यंत्र और निर्देश दिया है हम लोगो को अपने आप को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है कि हम अच्छाई को चुन सके! एक दैवीय नैतिक मंत्र जो मानवता के लिए पूर्व निर्णित मंत्र है और एक ऐसा मंत्र है जो बिना समय गवाये अच्छाई प्राप्त करने का चिरंतन आवेदन है !

नैतिक सभ्यता ! यह दैवीय मंत्र नूह (नोह) के "सात नियम" के रुप में जाना जाता है! जो की अच्छाई की संक्षिप्त परिभाषा स्थापित करता है और जेा सभी मनुष्येा पर लागू होता है ! आधुनिक इतिहास ने प्रमाणित कर दिया है कि नैतिकता मानवीय अच्छाईयों के विचारो पर आधारित होती है ! यह आत्मचेतना और सार है हृदय ग्राही नहीं है उस से आगे बिलकुल साफ है कि प्रशिक्षा देनेवाले और नियमों को दबाव पूर्वक लागू कराने वालों को की, नैतिक बन्धन के गहरे विचार को न तो डाट – डपट कर न तो धमकी से ही उत्साहित किया जा सकता है ! यह केवल शिक्षा के ज्ञान से प्राप्त किया जा सकता है इसके लिए "देखने के लिए आंख और सुनने के लिए कान चाहिए" जिसके लिए हम सभी गणनीय है!.

"नूहियन कोड का प्राथमिक साथ दैवीय नियम," मुसलाधारा वर्षा के बाद नोह और उसके बच्चेां को दिया गया ! इन नियमों ने नोह (नूह) और उसके बच्चेां को निश्चित कराया कि नयी मानव जाति को स्थापित करने वाली "यह मानवता" फिर से जंगल मे लुप्त नहीं होगी ! यह नियम न्याय का न्यायालय की स्थापित करने की आज्ञा देता है और मूर्तिपूजा को रोकता है, ईश्वर की निंदा, आत्मघात, निकट सम्बन्धियो के साथ मैथुन, डकैती और जीवित प्राणियो के अंग को खाने से रोकता है यही नैतिकता का आधार है ! और ये आद्यार नैतिक व्यवहार के सभी भागेां को प्राप्त करने में सक्षम है !

लोगो के बीच सातो नियम के आचरण (रीति) को प्रोत्साहित करने के लिए एक विशिष्ट कार्य की शिक्षा देना है ! आज की धार्मिक सहिष्णुत और महान स्वतंत्रता के प्रति झुकाव, इन नियमों को चारो तरफ प्रसारित कर उन्नति का मार्ग प्रसस्त करता एक मात्र "तंक" है ! इसके लिए इन नियमो की भक्ति (अवलमबन) द्धारा जेा कि अपने निर्माता दैविक अच्छाइयों को अपनाकर अपने निर्माता के प्रति सभी मानवता को एकता मे पिरोकर और सामन्य नैतिक उत्तर दायित्व में बांधना ही अपने निर्माता के प्रति भक्ति है ! यह भावना सभी लोगो के बीच शांति और एकता विकसित करती है जिसके द्धारा सम्पूर्ण अच्छाईया प्राप्त होती है ! जैसा कि स्त्रोत निर्माण कहते है कि "कितना अच्छा, कितनी शांति (खुशी) प्राप्त होगी कि सभी भाई — भाई चित स्थिर करके एकता से एक साथ मिलजूलकर रहें !"

© '07 Ask Noah International and www.asknoah.org